आये कितनी भी बाधाएं मुझे मंजिल की और ही बढ़ना है।
बिना रुके बिना थके मुझे उस परम शिखर पर चढ़ना है।
फिसलन भरे रास्ते पर कांटे भी हैं अंगारों पर भी चलना है।
झुककर उड़कर जम्प लगाकर माया से बचकर निकलना है।
कोई भी परिस्थिति आए मुझे उसके अनुसार ही ढ़लना है।
मनमत परमत को छोड़कर मुझे श्रीमत पर ही सम्भलना है।
कंकड़ पत्थर छोड़कर अपने मुख से ज्ञान रत्न ही उगलना है।
कोई बदले या ना बदले मुझको तो श्रीमत पर ही बदलना है।
महाविनाश से पहले पावन बनकर अपने तन से निकलना है।
रुकने का अब समय नहीं मुझे अब अपने घर को चलना है।
ॐ शांति!!!